हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का निष्कलंक जीवन

■ मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां

जीवन का सीधा और सच्चा मार्ग पाने के लिए मनुष्य को सदैव ईश्वरीय मार्ग-प्रदर्शन की आवश्यकता रही है । ईश्वरीय शिक्षा और ईश्वरीय मार्गदर्शन से अलग रहकर मनुष्य कभी भी सीधे मार्ग को पा नहीं सकता । मनुष्य को जीवन का सीधा और सच्चा मार्ग दिखाने के लिए 'अल्लाह' ने 'किताबें' उतारीं और अपने 'रसूल' भेजे । रसूलों ने लोगों के समक्ष ईश्वरीय ग्रंथों के अर्थ और अभिप्राय को स्पष्ट रूप से बयान किया और 'अल्लाह' के दिये हुए आदेशों के अनुसार चलकर उन्हें दिखाया । उन्होंने लोगों के सामने अपना आदर्श जीवन प्रस्तुत किया ताकि वे अच्छी तरह इस बात को समझ सकें कि ईश्वरीय इच्छानुसार जीवन व्यतीत करने का तरीक़ा क्या होता है ।

अल्लाह की ओर से यदि कोई 'रसूल' न आता, केवल 'किताब' का अवतरण होता, तो उस किताब के समझने में लोगों के बीच विभेद होता और यह निर्णय न हो पाता कि सत्य किसकी ओर है और किसकी ओर नहीं है । ईश्वरीय आदेशों के वास्तविक अभिप्राय और उद्देश्य को समझने में लोग ग़लतियां करते और कोई न होता जो उन्हें ईश्वरीय आदेशों का वास्तविक अर्थ और उद्देश्य बता सकता । इसके अतिरिक्त मनुष्य की यह एक आवश्यकता है कि जीवन के समस्त मामलों में कोई उसके साथ शरीक होकर अपने व्यवहार और वचन से उसको जीवन का सीधा मार्ग दिखाये । विचार और व्यवहार प्रत्येक दृष्टि से उसकी शिक्षा-दीक्षा का उपाय करे और उसमें सत्यानुसरण की भावना पैदा करे । लोगों को बताये कि जीवन के कठिन और पेचीदा मार्गों में वे किस प्रकार सत्य और न्याय के मार्ग को अपनाएं, और उसी पर जीवन भर चलते रहें ।

मनुष्य की यह आवश्यकता किसी फ़रिश्ते के द्वारा पूरी नहीं हो सकती थी । 'फ़रिश्तों' को मानवीय आवश्यकताओं से क्या संपर्क ? 'फ़रिश्तों' की मनोवृति और प्रकृति मानवों से सर्वथा भिन्न होती है । इसलिए वे मानवीय जीवन के लिए दृष्टांत और नमूना नहीं बन सकते । यही कारण है कि अल्लाह ने किताब के साथ जो 'रसूल' भी भेजा वह मनुष्य था 'फ़रिश्ता' न था ।

'रिसालत' और नुबूवत का इतिहास भी उतना ही लंबा है जितना कि मानव का इतिहास है । रिसालत और नुबूवत का सिलसिला उसी समय से आरंभ होता है जबकि पहले मनुष्य ने इस धरती पर क़दम रखा था । प्रत्येक जाति में अल्लाह के रसूल आये । उन्होंने अपनी जाति वालों को स्वयं उन्हीं की भाषा में संबोधित किया । अल्लाह के अंतिम रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) हैं । आपके बाद अब मनुष्य के मार्गदर्शन के लिए कोई नया रसूल आने वाला नहीं है । आप पर 'नुबूवत' का सिलसिला समाप्त हो जाता है । अल्लाह के अंतिम रसूल के दायित्वों का जो विवरण क़ुरआन में मिलता है वह यह है : "और याद करो जबकि इबराहीम और इस्माईल इस घर (काबा) की दीवारें उठा रहे थे (तो प्रार्थना करते जाते थे) ...हे हमारे रब ! उन लोगों के बीच उन्हीं में से एक ऐसा रसूल उठाना जो उन्हें तेरी 'आयतें' पढ़कर सुनाये, उन्हें 'किताब' और 'हिकमत' (तत्वदर्शिता) की शिक्षा दे और उनकी आत्मा को शुद्ध (और उसके विकसित होने का अवसर प्रदान) करे । निस्संदेह तू अपार शक्ति का मालिक और तत्वदर्शी है ।"

(अल-बक़रा : 129)

एक-दूसरे स्थान पर कहा गया : "अल्लाह ने ईमान वालों पर यह बहुत बड़ा एहसान किया है जबकि उनके बीच उन्हीं में से एक 'रसूल' उठाया जो उन्हें उसकी आयतें सुनाता है, उनकी आत्मा को शुद्ध (और विकसित होने का अवसर प्रदान) करता है और उन्हें किताब और हिकमत (तत्वदर्शिता) की शिक्षा देता है, जबकि इससे पहले वे खुली गुमराही में पड़े हुए थे ।' (आले इमरान : 164)

इन आयतों से स्पष्ट है कि नबी (सल्ल०) की ज़िम्मेदारी जहां यह थी कि आप लोगों को क़ुरआन की आयतें पढ़कर सुनाएं वहीं आप की नुबूवत के तीन महत्वपूर्ण उद्देश्य और भी थे ।

- एक, यह कि आप लोगों को किताब और ईश्वरीय नियम और क़ानून की शिक्षा दें ।
- दूसरे, आप लोगों को हिकमत, तत्वदर्शिता और बुद्धिमत्ता की शिक्षा दें ताकि लोगों में यह योग्यता उभर सके कि वे वास्तविकता को समझ सकें और विचार, चिंतन और

कर्म क्षेत्र में सही नीति अपना सकें ।

● और तीसरे, आप लोगों की आत्मा को शुद्ध करें ताकि वे विकास पा सकें । उनकी ऐसी शिक्षा-दीक्षा का उपाय करें कि उनमें उत्तम से उत्तम गुण उभर सकें और उनकी व्यक्तिगत और सामाजिक हर प्रकार की ख़राबियां दूर हों । यही वह महान कार्य है जिसके द्वारा उत्तम जीवन व्यवस्था और आदर्श इस्लामी समाज का निर्माण होता है ।

नबी (सल्ल॰) अपने दायित्व की दृष्टि से शिक्षक, दीक्षक, मार्गदर्शक, नियामक, न्यायाधिकारी, नायक, हाकिम सब कुछ थे । आपके जीवन को ईमान वालों के लिए आदर्श जीवन निर्धारित किया गया : ''(हे नबी ! लोगों से) कह दो : यदि तुम (सचमुच) अल्लाह से प्रेम करते हो, तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुम से प्रेम करने लगेगा ।''

(आले इमरान : 31)

''(हे नबी !) कहो : अल्लाह और रसूल का हुक्म मानो । फिर यदि वे मुंह मोड़ते हैं, तो अल्लाह काफ़िरों को पसन्द नहीं करता ।'' (आले इमरान : 32)

स्वयं नबी (सल्ल॰) कहते हैं : ''जिसने मुहम्मद की आज्ञा का पालन किया निस्संदेह उसने अल्लाह के आदेश का पालन किया और जिसने मुहम्मद की अवज्ञा की निश्चय ही उसने अल्लाह की अवज्ञा की और मुहम्मद लोगों के बीच सीमांतर की हैसियत रखते हैं ।'' (बुख़ारी)

क़ुरआन में एक जगह कहा गया : ''निश्चय ही तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श था उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अंतिम दिन की आशा रखता हो ।'' (अल-अहज़ाब : 21)

'रसूल' के रूप में आपको मुक़दमों (अभियोग) के फ़ैसला करने का अधिकार प्राप्त था : ''(हे नबी !) हम ने यह किताब हक़ के साथ तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिखाया है उसके अनुसार तुम लोगों के बीच फ़ैसला करो ।'' (अन-निसा : 105)

''तो नहीं, (हे नबी !) तुम्हारे रब की क़सम वे कदापि ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक कि यह बात न हो कि इनके बीच जो झगड़ा उठे उसमें ये तुम से फ़ैसला कराएं, फिर जो फ़ैसला तुम कर दो उस पर ये अपने दिल में कोई खटक न पाएं, और पूरे तरीक़े से मान लें ।

(अन-निसा : 65)

नबी (सल्ल॰) 'रसूल' होने की हैसियत से हाकिम और नायक भी थे । आपकी बात माननी सबके लिए अनिवार्य थी : ''और हमने जो रसूल भी भेजा इसीलिए भेजा कि अल्लाह के हुक्म से उसके आदेशों का पालन किया जाए ।'' (अन-निसा : 64)

''हे ईमान लाने वालो ! अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो और उनका जो तुम में अधिकारी लोग हैं, फिर यदि तुम्हारे बीच किसी बारे में झगड़ा हो जाए तो उसे अल्लाह और रसूल की ओर ले जाओ यदि तुम अल्लाह और अंतिम दिन पर ईमान रखते हो ।'' (अन-निसा : 59)

नबी (सल्ल॰) ईश्वरी ग्रंथ के व्याख्याकर्ता भी थे । आपकी यह एक ज़िम्मेदारी थी कि आप उन आदेशों को स्पष्ट रूप से बयान करें जो अल्लाह की ओर से अवतीर्ण हों : ''और (हे मुहम्मद !) हमने तुम पर याददिहानी (अनुस्मारक अर्थात क़ुरआन) उतारी है ताकि तुम लोगों के सामने खोल-खोलकर बयान कर दो जो कुछ उनकी ओर उतारा गया है ।'' (अन-नह्ल : 44)

अल्लाह की ओर से आपको नियम बनाने, व्यवस्था या विधान करने के अधिकार भी प्राप्त थे । क़ुरआन मजीद में नबी (सल्ल॰) के बारे में कहा गया है : ''वह उन्हें नेक बातों का हुक्म देता है और बुरी बातों से रोकता है । उनके लिए उत्तम चीज़ें हलाल (वैध) और निकृष्ट चीज़ें हराम (अवैध) ठहराता है, और उन पर से वह बोझ और बंधन उतार देता है जो उन पर चढ़े हुए थे ।''

(अल-आराफ़ : 157)

इससे मालूम हुआ कि हलाल व हराम (वैध व अवैध) के वे आदेश जो नबी (सल्ल॰) के फ़ैसलों और आपके कथनों से उद्धृत होते हैं उन्हें छोड़ा नहीं जा सकता । स्वयं नबी (सल्ल॰) ने भी अपने विधान एवं नियम संबंधी अधिकार का उल्लेख किया है । मिक़दाम बिन मअदीयकरब (रज़ि॰) से उल्लिखित है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : ''जान रखो ! मुझे क़ुरआन दिया गया और उसके साथ वैसी ही एक और चीज़ भी । ख़बरदार रहो ! ऐसा न हो कि कोई पेट भरा व्यक्ति अपनी मसनद पर बैठा हुआ कहने लगे कि तुम्हारे लिए बस इस क़ुरआन का पालन आवश्यक है, जो कुछ इसमें 'हलाल' पाओ उसे हलाल समझो और जो कुछ इसमें 'हराम' पाओ उसे हराम समझो ।

(अबू दाऊद, इब्न माजा, दारमी, हाकिम)

हज़रत अबू राफ़ेअ (रज़ि॰) से उल्लिखित है कि आपने

कहा : "मैं कदापि तुम में से किसी को न पाऊं कि वह अपनी मसनद पर तकिया लगाए बैठा हो और उसे मेरे उन आदेशों में से, जिनका मैंने हुक्म दिया है या जिनसे मैंने वर्जित किया है, कोई आदेश पहुंचे और वह (सुनकर) कहे कि हम नहीं जानते, हम तो जो कुछ अल्लाह की किताब में पाएंगे उसका पालन करेंगे ।"

(अबू दाऊद, अहमद, इब्न माजा, तिरमिज़ी, शाफ़ई, बैहक़ी-दलाइलुन्नुबूवत)

इरबाज़ बिन सारियह (रज़ि॰) से उल्लिखित है कि नबी (सल्ल॰) 'ख़ुतबा' (भाषण) देने के लिए खड़े हुए और कहा : "क्या तुम में से कोई व्यक्ति अपनी मसनद पर तकिया लगाये हुए यह समझता है कि अल्लाह ने कोई चीज़ हराम नहीं की है सिवाय उन चीज़ों के जो कुरआन में बयान की गयी हैं । सावधान ! अल्लाह की क़सम, मैंने जिन बातों का हुक्म दिया है और जो उपदेश दिये हैं और जिन बातों से रोका है वे कुरआन ही की तरह हैं बल्कि कुछ ज़्यादा ।"

(अबू दाऊद)

इन हदीसों से स्पष्ट है कि अल्लाह के आज्ञाकारी लोगों के लिए रसूल के आदेशों का अनुपालन उसी प्रकार आवश्यक है जिस प्रकार कुरआन में वर्णित आदेशों का पालन करना उनके लिए आवश्यक है । और जिन बातों से रसूल ने उन्हें रोका है उनसे बचना भी उनके लिए उसी तरह ज़रूरी है जिस तरह उन चीज़ों से बचना ज़रूरी है जिनसे कुरआन में रोका गया है ।

नबी की असाधारण योग्यता

अल्लाह ने सदैव नबियों को असाधारण योग्यताएं प्रदान कीं । वे अपनी असाधारण विशेषताओं और योग्यताओं के बिना उस महान कार्य को कर ही नहीं सकते थे जो अल्लाह की ओर से उन्हें सौंपा जाता रहा है । नबी वास्तव में नुबूवत ही के लिए पैदा किये गये । उन्हें अत्यंत पवित्र स्वभाव और प्रकृति प्रदान की गयी । स्वभावत: वे ऐसे थे कि बिना किसी विशेष सोच-विचार के अपने अंतर्ज्ञान से ही सही परिणाम तक पहुंच जाते थे । नबी मनुष्य ही थे परंतु उन्हें मनुष्यता का उच्चतम स्थान प्राप्त था । सत्य व असत्य में अन्तर करना उनका स्वभाव था । वे शारीरिक और आत्मिक प्रत्येक दृष्टि से पूर्ण थे । अल्लाह ने उनकी स्वाभाविक क्षमता को उन्नति दी और उन्हें वह चीज़ प्रदान की जिसके लिए कुरआन में 'इल्म' (ज्ञान), 'हुक्म' (निर्णय शक्ति), हिदायत (मार्गदर्शन), 'बय्यनह' (स्पष्ट प्रमाण) आदि शब्द प्रयुक्त हुए हैं ।

हज़रत मूसा (अलैहि॰) के बारे में कहा गया है : "और जब वह अपनी युवावस्था को पहुंचा और भरपूर हो गया, तो हमने उसे हुक्म (निर्णय शक्ति, तत्वदर्शिता) और ज्ञान प्रदान किया ।" (अल-क़सस : 14)

हज़रत सालेह (अलैहि॰) ने अपनी जाति वालों को संबोधित करते हुए कहा : "हे मेरी जाति वालो ! सोचो तो सही, यदि मैं अपने रब की एक 'बय्यनह' (स्पष्ट प्रमाण) पर हूं और उसने मुझे अपनी दयालुता (नुबूवत) प्रदान की है तो (इसके बाद) अल्लाह के मुक़ाबले में कौन मेरी सहायता करेगा यदि मैं उसकी अवज्ञा करूं ? अत: तुम घाटे में डालने के सिवा और मुझे कुछ नहीं दे सकते ।"

(हूद : 63)

यह असाधारण ज्ञान और बुद्धिमत्ता हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को भी प्रदान की गयी : "(हे नबी !) कहो : मैं अपने रब की ओर से एक खुली दलील (अथवा स्पष्ट मार्ग) पर हूं ।" (अल-अनआम : 57)

"(हे नबी !) कहो : मेरी राह तो यह है कि मैं पूरी सूझ-बूझ के साथ अल्लाह की ओर बुलाता हूं और जो मेरे अनुयायी हैं वे भी ।" (यूसुफ़ : 108)

"और अल्लाह ने तुम पर किताब और हिकमत उतारी और उसने तुम्हें वह कुछ बताया जो तुम नहीं जानते थे ।"

(यूसुफ़ : 113)

कुरआन के इन शब्दों से स्पष्ट है कि अल्लाह ने नबी को किताब ही प्रदान नहीं की बल्कि इसके साथ ऐसा प्रकाश और ज्योति भी पैदा की जिससे नबी की हैसियत वास्तविकताओं के निरीक्षक की हो जाती है । इस कारण वे सत्य और असत्य में अन्तर करते और मामलों का सही निर्णय करते और जीवन की पेचीदा राहों में सत्य की ओर मार्गदर्शन करते हैं । यह आंतरिक सूझबूझ और अंत: प्रकाश उन्हें प्रत्येक समय प्राप्त रहता है । जिन बातों को दूसरे लोग गहरे सोच-विचार और चिंतन के बाद भी नहीं समझ पाते, नबी की दृष्टि उसे क्षण भर में पा लेती है । इसके लिए पारिभाषिक शब्द 'वह्य ख़फ़ी' (सूक्ष्म दैवी प्रकाशन) प्रयुक्त करते हैं । नबी एक दैवी ज्ञान के वातावरण में होता है जहां वास्तविकता निगाहों से ओझल नहीं होती । उसके मुख से जो कुछ निकलता है सत्य होता है उसके क़दम

सत्य मार्ग की ओर ही उठते हैं । उसके स्वभाव की पवित्रता किसी असत्य चीज़ को पसन्द नहीं कर सकती । नबी को इसका पूरा ज्ञान होता है कि ईश्वरीय मार्गदर्शन प्रत्येक समय उसके साथ है । यही वह बात है जिसे आपने अपनी जिह्वा की ओर संकेत कर के इन शब्दों में स्पष्ट किया : "उस सत्ता की क़सम, जिसके हाथ में मेरे प्राण हैं, इससे जो कुछ निकलता है, सत्य ही होता है ।"

नबी का शुद्ध और निष्कलंक जीवन

जिस प्रकार अल्लाह अपने नबी को असाधारण योग्यता प्रदान करता और है उसे ज्ञान, तत्वदर्शन, प्रकाश और मार्ग-प्रदर्शन से सम्मानित करता और 'वह्य' के द्वारा उसे सत्य मार्ग दिखाता है उसी प्रकार वह अपने नबी की हर समय देखभाल और रक्षा करता है । एक ओर वह नबी के पालन-पोषण और दीक्षा आदि की विशेष व्यवस्था करता है और दूसरी ओर वह उसे हर प्रकार की गुमराहियों और ग़लत कामों से बचाता है । यही कारण है कि नबियों का नुबूवत मिलने से पहले का जीवन भी निष्कलंक होता है । नुबूवत के उच्च पद पर नियुक्त होने के बाद नबियों को असाधारण ज्ञान, सूझबूझ और तत्वदर्शिता प्रदान की जाती है ताकि वे सत्य मार्ग पर स्थिर रह सकें और लोगों को सत्य की ओर बुला सकें । मनुष्य होने के कारण यदि कभी नबियों से सोचने-समझने में कोई ग़लती या सूक्ष्म 'वह्य' के सूक्ष्म संकेतों को समझने में कोई भूलचूक हो भी जाती है तो तुरंत ही अल्लाह उसे सुधार देता है ।

हज़रत नूह (अलैहि॰) ने अपने बेटे को पानी में डूबते देखा तो पुकार उठे : "हे रब ! मेरा बेटा मेरे घर वालों में से है ! और निश्चय ही तेरा वादा सच्चा है ।" (सूरह हूद : 45) अल्लाह ने उसी समय बताया : "हे नूह ! वह तेरे घर वालों में से नहीं, वह तो अशिष्ट कर्म है ।" (हूद : 46)

अल्लाह की 'वह्य' नबी (सल्ल॰) की भी संरक्षक रही है । यदि कहीं आप से साधारण-सी भूलचूक हुई, तो तुरंत अल्लाह की 'वह्य' ने उसका सुधार कर दिया । एक मुहिम के मौक़े पर नबी (सल्ल॰) ने उन लोगों को मुहिम पर न चलने की इजाज़त दे दी जिन्होंने आप से इसके लिए इजाज़त चाही थी । इस पर अल्लाह ने इन शब्दों में सचेत किया : "(हे नबी !) अल्लाह तुम्हें क्षमा करे ! तुम ने उन्हें (पीछे रह जाने की) इजाज़त क्यों दे दी (तुम उन्हें इजाज़त न देते) यहां तक कि वे लोग खुलकर तुम्हारे सामने आ जाते जो सच्चे हैं और तुम झूठों को भी जान लेते ? जो लोग अल्लाह पर और अंतिम दिन पर ईमान रखते हैं वे कभी तुम से इसकी इजाज़त नहीं मांगेंगे कि अपने माल और अपने प्राणों के साथ जिहाद न करें । अल्लाह उन लोगों को जानता है जो उसका डर रखते हैं ।" (अत-तौबा : 43-44)

नबी (सल्ल॰) के मुंह बोले बेटे हज़रत ज़ैद (रज़ि॰) का हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) से विवाह हुआ, परन्तु जब दोनों में निबाह मुश्किल हो गया, तो हज़रत ज़ैद (रज़ि॰) ने आप से कहा कि मैं उन्हें तलाक़ देना चाहता हूं । उस समय आपने हज़रत ज़ैद (रज़ि॰) को ऐसा करने से रोका, हालांकि आप को इशारा मिल चुका था कि हज़रत ज़ैद तलाक़ दे देंगे और हज़रत ज़ैनब (रज़ि॰) आपकी धर्मपत्नियों में सम्मिलित होंगी, परन्तु आपने हज़रत ज़ैद से यही कहा कि अपनी पत्नी को तलाक़ न दो, अल्लाह से डरो । आपको डर था कि लोग कीचड़ उछालेंगे कि देखो इस व्यक्ति ने अपने मुंह बोले बेटे की तलाक़ पायी हुई पत्नी से विवाह कर लिया । इस संबंध में क़ुरआन में कहा गया : "(हे नबी !) याद करो जब तुम उस व्यक्ति से जिस पर अल्लाह ने एहसान किया और तुमने भी जिस पर एहसान किया (अर्थात ज़ैद से) कह रहे थे : अपनी पत्नी को अपने पास रहने दो (उसे तलाक़ न दो) और अल्लाह से डर । तुम अपने जी में वह बात छिपाये हुए थे जिसे अल्लाह खोलने वाला था, तुम लोगों से डर रहे थे जबकि अल्लाह इसका ज़्यादा हक़ रखता है कि तुम उससे डरो ।" (अल-अहज़ाब : 37)

नबी (सल्ल॰) की किसी धर्म पत्नी को या आपकी कुछ पत्नियों को कोई चीज़ थी जो पसन्द न थी । कुछ उल्लेखों से मालूम होता है कि वह मधु था । कुछ मधु ऐसे होते हैं जो अपने स्वाद और गंध की दृष्टि से कुछ लोगों को पसन्द नहीं हो सकते । नबी (सल्ल॰) को मधु बहुत प्रिय था, परन्तु जब आपको मालूम हुआ कि पत्नियों में से कुछ को मधु पसन्द नहीं है तो आपने इस विचार से कि उन्हें तकलीफ़ न हो, मधु प्रयोग करना छोड़ दिया । इस पर अल्लाह ने क़सम तोड़ने का हुक्म दिया । अल्लाह ने इस बात को पसन्द नहीं किया कि एक हलाल (विहित) और उत्तम वस्तु का प्रयोग आप और आपके साथी छोड़ दें क्योंकि आपका तरीक़ा बाद में आने वालों के लिए उदाहरण बन सकता था ।